LATEST EDITION

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मध्यप्रदेश

उपनिरीक्षक (SI)/सूबेदार

MADHYA PRADESH PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD

HANDWRITTEN NOTES

भाग-1 हिंदी + अंग्रेजी

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मध्य प्रदेश

उपनिरीक्षक (SI)/सूबेदार

MADHYA PRADESH PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD

भाग – 1

हिंदी + अंग्रेजी

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**मध्य प्रदेश पुलिस उपनिरीक्षक (SI)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **मध्य प्रदेश प्रोफेशनल एग्जामिनेशन बोर्ड (MPPEB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**मध्य प्रदेश पुलिस उपनिरीक्षक (SI)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/9mp4k3

Online Order करें - https://shorturl.at/pP479

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

हिन्दी		
क्र. सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	शब्द निर्माण	1
2.	प्रत्यय	6
3.	संधि	14
4.	समास	30
5.	संज्ञा	47
6.	सर्वनाम	52
7.	विशेषण	54
8.	क्रिया	57
9.	कारक	59
10.	लिंग	61
11.	भिन्नार्थक / अनेकार्थी शब्द	64
12.	विलोम शब्द	66
13.	पर्यायवाची शब्द	81
14.	वाक्यांश के लिए एक शब्द	93

15.	पल्लवन	107
16.	वाक्य-शुद्धि	110
17.	शब्द-शुद्धि	116
18.	वाक्य रचना एवं वाक्यों के प्रकार तथा पदबंध	121
19.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	127
20.	संक्षिप्तीकरण	139
21.	पारिभाषिक : प्रशासनिक शब्दावली	142
22.	शब्द-युग्म	155
23.	हिन्दी भाषा एवं बोलियाँ	167
24.	काव्य बोध	172
25.	रस	174
26.	अलंकार	178
27.	छंद	186
28.	मध्यप्रदेश की पत्र-पत्रिकाएं	191

29.	अपठित गद्यांश	193
30.	अपठित पद्यांश	202

English		
S.no.	Chapter	Page
1.	Article	207
2.	Preposition	224
3.	Time and Tense	251
4.	Subject verb agreement	270
5.	Model Verbs	275
6.	Determiners/Adjective	280
7.	Active and Passive Voice	285
8.	Direct and Indirect Speech	295
9.	Sentence Correction / improvement of sentences	303
10.	Unseen Passage / Comprehension	308

हिंदी

अध्याय – 1

शब्द निर्माण

उपसर्ग

- **संस्कृत उपसर्ग** : - संस्कृत व्याकरण में 22 उपसर्ग होते हैं ।

1. **अति :- (**अधिक, परे)

बिना संधि – अतिक्रमण, अतिशय, अतिसार, अतिमानव, अतिव्याप्ति ।

दीर्घ संधि के उदा. – अतीन्द्रिय , अतीत , अतीव (अति + इव)

यण् संधि के उदा.- अत्यंत (अति +अंत), अत्यल्प (अति+अल्प), अत्युक्ति (अति +उक्ति)।

प्रत्यय से सम्बन्धित- अतिशयिक , आतिरेक्य (अति + रेक + य – प्रत्यय) आत्यंतिक ।

2. **अधि :- (ऊपर , अधिक)**

बिना संधि – अधिकरण , अधिगम, अधित्यका , अधिनायक , अधिनियम (अधि + नि +यम), अधिपति , अधिमास , अधिराज , अधिशासी , अधिसूचना ।

दीर्घ संधि – अधीक्षण (अधि +ईक्षण), अधीन (अधि+इन) , अधीश (अधि +ईश)।

यण् संधि – अध्ययन (अधि+अयन), अध्यापक , अध्याय ।

व्यंजन संधि – अधिष्ठाता (अधि+स्थाता), अधिष्ठान (अधि +स्थान)

प्रत्यय से सम्बंधित – आधिकारिक (अधिकार+इक), आधिपत्य , आध्यात्मिक (अध्यात्म +इक)।

3. **अभि :- (सामने , पास)**

बिना संधि – अभिज्ञ, अभिज्ञा , अभिनय , अभिन्यास, अभिप्राय, अभिभाषण , अभिभूत , अभिमन्यु, अभिमुख, अभियान, अभिराम, अभिलाषा, अभिवादन, अभिशंसा, अभिशाप , अभिसार ।

दीर्घ संधि – अभीप्सित (अभि +ईप्सित), अभीष्ट (अभि +इष्ट) ।

यण् संधि – अभ्यंतर (अभि + अंतर), अभ्यर्थी (अभि+ अर्थी), अभ्यागत , अभ्यास, अभ्युत्थान (अभि+उद्+स्थान), अभ्युदय(अभि +उद्+अय)।

व्यंजन संधि – अभिषेक (अभी+सेक)

प्रत्यय सम्बंधित – आभिजन (अभिजन+अ), अभिजात्य(अभिजात +य), आभ्यंतरिक ।

4. **नि :- (बड़ा , विशेष , निषेधात्मक)**

बिना संधि – निकर , निकाय , निकृष्ट , निगम, निदान , निधन , निधि (नि+धि) , निपट , निपात, निगुण , निबंध , नियंत्रण , नियम ,निरत , निरूपण, निरोध ।

यण् संधि – न्यस्त (नि+अस्त), न्याय (नि + आय), न्यास (नि + आस), न्यून (नि + ऊन)।

व्यंजन संधि – निषेध (नि+सेध), निष्ठा (नि+स्था)

प्रत्यय सम्बंधित –नैकट्य(नि+कट +य), नैदानिक (नि+दान+इक)

5. **प्रति :- (विपरित, प्रत्येक , ओर)**

बिना संधि – प्रतिकूल , प्रतिक्रिया , प्रतिक्षण , प्रतिघात, प्रतिज्ञा , प्रतिदिन , प्रतिनिधि , प्रतिनियुक्ति , प्रतिबन्ध, प्रतिभा , प्रतिमा , प्रतिरूप, प्रतिवाद , प्रतिवादी , प्रतिशत, प्रतिस्पर्धा , प्रतिहिंसा ।

दीर्घ संधि – प्रतीक (प्रति+इक), प्रतिक्षा (प्रति+ईक्षा)

यण संधि – प्रत्यक्ष (प्रति+अक्ष), प्रत्यपकार (प्रति+उप +कार), प्रत्यर्पण , प्रत्याघात , प्रत्यालोचना, प्रत्यावर्तन (प्रति + आ + वर्तन), प्रत्याशी , प्रत्युत्तर (प्रति + उद् + तर) , प्रत्युत्पन्न, प्रत्युपकार, प्रत्येक।

व्यंजन संधि- प्रतिषेध (प्रति+सेध -रोक), प्रतिष्ठा (प्रति + स्था), प्रतिष्ठा (प्रति + स्था), प्रतिष्ठित (प्रति + स्थित)।

प्रत्यय सम्बंधित – प्रातिनिधिक, प्रातिपदिक (प्रतिपद + इक)

6. **परि :-(चारों ओर , पास)**

बिना संधि – परिकल्पना , परिक्रमा , परिग्रह , परिचारिका , परिजन , परिज्ञान , परितोष , परिधान ,

परिधि , परिपूर्ण , परिवर्तन , परिमार्जन, परिवार , परिवेश , परिशिष्ट ।

दीर्घ संधि – परीक्षण(परि+ईक्षण), परीक्षा (परि + ईक्षा)

यण् संधि – पर्यंक (परि + अंक), पर्यटन(परि + अटन), पर्यवसान (परि + अव + सान), पर्यवेक्षण (परि + अव + ईक्षण), पर्याप्त (परि + आप्त), पर्यावरण (परि + आ + वरण), पर्युषण (परि + उषण)।

व्यंजन संधि – परिणय (परि + नय), परिमाण (परि+मान), परिष्कार (परि + कार), परिष्कृत (परि + कृत)।

7. **वि :- (विशेष , भिन्न , अभाव)**

बिना संधि – विधान , विनय , विनीत , विकट , विकराल , विकल , विकार , विकास , विकिरण , विकीर्ण , विकृत , विक्रम , विख्यात , विग्रह , विघटन, विचलित , वितान , वितृष्णा, विद्रोह , विधवा , विधान, विपुल , विप्लव , विभ्रम , विरस, विराम , विरुद्ध , विरेचन , विलम्ब , विलोम , विवेक , विशेष , विश्लेषण, विहार , ।

दीर्घ संधि – व्यंजन (वि+अंजन), व्यग्र (वि +अग्र), व्यक्ति (वि+अक्ति), व्यतिरेक (वि + अति + रेक), व्यभिचार (वि+अभि+चार), व्यय (वि+अय)

व्यवसाय (वि+अव+साय), व्यष्टि (वि+अष्टि), व्यसन (वि+असन), व्यस्त (वि+अस्त), व्याकरण, व्याकुल (वि+आ+कुल), व्याधि (वि+असन), व्यस्त (वि+अस्त), व्याकरण, व्याकुल (वि + आ + कुल), व्याधि (वि + आधी), व्यापार (वि + आ + पार)।

8. **अनु :- (पीछे, समान)**

बिना संधि – अनुकरण , अनुकूल , अनुक्रम , अनुगामी , अनुग्रहीत , अनुचर ,अनुज (अनु+ज), अनुज्ञप्ति , अनुज्ञा (अनुमति), अनुताप , अनुदान, अनुपूरक , अनुबंध , अनुप्रास, (अनु+प्र+आस) , अनुबंध , अनुभव , अनुमान , अनुयायी , अनुराग, अनुरूप , अनुवाद , अनुशंसा , अनुशासन , अनुसार ,।

दीर्घ संधि – अनूदित (अनु +उद्+इत)

यण् संधि – अन्वय (अनु+अय), अन्वीक्षण (अनु+ईक्षण), अन्वीक्षा (अनु+ईक्षा), अन्वेषक (अनु+एषक), अन्वेषण (अनु+एषण)।

व्यंजन संधि – अनुच्छेद (अनु+छेद), अनुष्ठान (अनु+स्थान)

प्रत्यय से सम्बन्धित –आनुपातिक (अनुपात +इक), आनुवंशिक, आनुषांगिक (अनु+संग+इक), आन्वयिक (अनु+अय+इक)।

9. **सु** :- (अच्छा , सरल)

बिना संधि – सुअवसर (सु+अव+सर), सुकर्म , सुगंध , सुगति , सुचरित्र , सुजन , सुदिन , सुदूर, सुदृढ़, सुनिश्चय (सु+निस्+चय),सुपरिचित , सुपाच्य, सुपुत्र , सुमन , सुमार्ग , सुरति , सुलभ, सुविधा , सुव्यवस्थित , सुशील ।

यण् संधि :- स्वच्छ (सु+अच्छ) , स्वंय (सु+अयं), स्वल्प (सु+अल्प), स्वस्ति (सु+अस्ति), स्वागत (सु+आ+गत)।

व्यंजन संधि – सुषमा (सु+समा) , सुषुप्त (सु+सुप्त)

प्रत्यय सम्बन्धित :- सौजन्य (सु+जन+य), सौभाग्य (सु+भाग+य), सौमनस्य (सु+मानस्+य) , सौमित्र (सु+मित्र+अ) ।

10. **अप** :-(बुरा , विपरित,अपवाद)

बिना सन्धि :- अपकर्म , अपकर्ष , अपकार , अपकीर्ति, अपभ्रंश, अपमान, अपयश, अपराध, अपरूप, अपवर्तन , अपव्यय , अपशकुन, अपशब्द, अपहरण ।

दीर्घ संधि- अपांग (अप+अंग), -स्वर संधि में अपवाद।

गुण संधि – अपेक्षा (अप+ईक्षा) , अपेक्षित(अप+ईक्षित)।

प्रत्यय सम्बन्धित – आपराधिक (अप + राध + इक), आपेक्षिक (अप + ईक्षा + इक) , आवधिक (अव + धि + इक)।

11. **अपि :- (**निश्चय, किन्तु,भी)

बिना संधि – अपितु , अपिधान, अपिहित ।

12. **अव :- (नीचा , बुरा** , हीन , उपयुक्त भी)

बिना संधि – अवकाश , अवगत, अवगाहन, अवगुण, अवचेतन, अवज्ञा, अवतार, अवतीर्ण , अवधान, अवधारणा, अवधि, अवनति, अवबोध, अवमानना , अवरोध, अवरोह, अवलेह, अवलोकन, अवसर , अवसाद, अवस्था।

दीर्घ संधि – अवान्तार (अव+अंतर), अवाप्ति (अव+आप्ति)।

गुण संधि – अवेक्षण (अव+ईक्षण), अवेक्षा(अव+ईक्षा=ध्यान)

व्यंजन संधि – अवच्छद (अव+छद), अवच्छिन्न (अव+छिन्न), अवच्छेद (अव+छेद=खंड)।

प्रत्यय संबंधित – आवयविक (अव+यव+इक)।

	बुद्धि	बुद्धिमान
कीय	राज नाभ	राजकीय नाभिकीय
शाली	गौरव प्रतिभा शक्ति	गौरवशाली प्रतिभाशाली शक्तिशाली

4) अप्रत्यय वाचक (संतान वाचक) तद्धित प्रत्यय – वे प्रत्यय जो किसी संज्ञा के अंत में जुड़कर उत्पन्न होने अर्थात संतान के अर्थ का बोध कराते हैं, संतान बोधक/अप्रत्यय वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं ।

प्रत्यय	मूलशब्द	तद्धितान्त
एय	अंजनी अतिथि पुरुष राधा	आंजनेय आतिथेय पौरुषेय राधेय
आयन	दंड नार कात्य	दंडायन नारायण कात्यायन
अ	यदु दनु अदिति	यादव दानव आदित्य
इ	वाल्मीक दशरथ	वाल्मीकि दशरथी
य	पुलस्ति चतुर्मास	पौलस्त्य चातुर्मास्य
आमह	पितृ मातृ	पितामह मातामह
ई	पर्वत गांधार	पार्वती गांधारी

5) ऊनतावाचक / लघुतावाचक / हीनतावाचक तद्धित प्रत्यय – वे प्रत्यय जो किसी संज्ञा शब्दों के साथ जुड़कर उनके छोटे/लघु रूप का बोध कराते हैं, ऊनतावाचक / लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय	मूलशब्द	तद्धितान्त
इया	बिंदी खाट लाठा	बिंदिया खटिया लठिया
ई	रस्सा प्याला हथोड़ा थाल	रस्सी प्याली हथोड़ी थाली
आ	लालू कालू	लालुआ कलुआ
री	कोठा मोट बांस	कोठारी मोटरी बाँसुरी
ली	खाज ढ़प टीका	खुजली ढ़पली टिकली
ड़ी	टांग पंख आंत	टँगड़ी पंखड़ी आंतड़ी
ड़ा	मुख लँग चाम	मुखड़ा लंगड़ा चमड़ा
सा	लाल थोड़ा छोटा उड़ता	लालसा थोड़ासा छोटासा उड़तासा
ओला	घड़ा सांप गढ़	घड़ोला सँपोला गढ़ोला
वा	बच्चा पुर	बचवा पुरवा

6) स्त्रीबोधक तद्धित प्रत्यय – वे प्रत्यय जो किसी संज्ञा के अंत मे जुड़कर स्त्री जाति का बोध कराते हैं,

अध्याय – 5

व्याकरण अध्ययन

संज्ञा (Noun)

संज्ञा (Noun) की परिभाषाः-

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं

दूसरे शब्दों में- किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं ।

जैसे – प्राणियों के नाम- मोर, घोड़ा, अनिल, किरण जवाहरलाल नेहरू आदि ।

वस्तुओं के नाम- अनार ,रेडियों , किताब, संदूक, आदि।

स्थानों के नाम- कुतुबमीनार , नगर, भारत, मेरठ आदि

भावों के नाम- वीरता , बुढ़ापा, मिठास आदि

यहाँ 'वस्तु ' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल वाणी और प्रदार्थ का वाचक नहीं ,वरन उनके धर्मो का भी सूचक है।

साधारण अर्थ में 'वस्तु ' का प्रयोग इस अर्थ में नही होता। अतः वस्तु के अंतर्गत प्राणी, प्रदार्थ और धर्म आते हैं। इन्हीं के आधार पर संज्ञा के भेद किये गये हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के तीन भेद होते है-

(1) व्यक्तिवाचक (Proper noun)

(2) जातिवाचक (Common noun)

(3) भाववाचक (Abstract noun)

(1)व्यक्तिवाचक संज्ञा :-जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

जैसे-

व्यक्ति का नाम-रवीना , सोनियां गाँधी , श्याम, हरि, सुरेश , सचिन आदि ।

वस्तु का नाम- कर , टाटा चाय, कुरान , गीता ,रामायण आदि ।

स्थान का नाम-ताजमहल, कुतुबमीनार , जयपुर आदि।

दिशाओं के नाम- उत्तर , पश्चिम , दक्षिण , पूर्व ।

देशों के नाम- भारत , जापान , अमेरिका, पाकिस्तान, बर्मा ।

राष्ट्रीय जातियों के नाम- भारतीय , रूसी, अमेरिकी।

समुन्द्रों के नाम- काला सागर , भूमध्य सागर , हिन्द महासागर , प्रशान्त महासागर।

नदियों के नाम- गंगा, ब्रह्मपुत्र, बोल्गा, कृष्णा कावेरी , सिन्धु ।

पर्वतों के नाम- हिमालय, विन्ध्याचल, अलकनंदा, कराकोरम ।

नगरों चोको और सड़कों के नाम वाराणसी , गया,चाँदनी चौक, हरिसन रोड़, अशोक मार्ग ।

पुस्तकों तथा समाचारों के नाम- रामचरित मानस, ऋग्वेद , धर्मयुग, इण्डियन नेशन, आर्यावर्त ।

ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम- पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही -विद्रोह, अक्तूबर -क्रांति ।

दिनों महीनों के नाम- मई, अक्टूबर ,जुलाई, सोमवार , मंगलवार ।

त्योहारों उत्सवों के नाम- होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयादशमी ।

(2) जातिवाचक संज्ञा :- जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

बच्चा , जानवर , नदी, अध्यापक, बाजार , गली, पहाड़, खिड़की, स्कूटर आदि शब्द एक ही प्रकार प्राणी, वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये जातिवाचक संज्ञा' हैं।

जैसे - लड़का, पशु-पक्षियों वस्तु , नदी , मनुष्य, पहाड़ आदि।

'लड़का' से राजेश, सतीश, दिनेश आदि सभी 'लड़कों का बोध होता है।

'पशु-पक्षियों से गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि सभी जाति का बोध होता है।

'वस्तु' से मकान, कुर्सी, पुस्तक, कलम आदि का बोध होता है।

'नदी' से गंगा यमुना, कावेरी आदि सभी नदियों का बोध होता है।

'मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य-जाति का बोध होता है।

'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता हैं।

(3) भाववाचक संज्ञाः-

थकान, मिठास, बुढ़ापा, गरीबी , आजादी , हँसी , चढ़ाई, साहस,

वीरता आदि शब्द-भाव, गुण, अवस्था तथा क्रिया के व्यापार का बोध करा रहें हैं । इसलिए ये 'भाववाचक संज्ञाएँ' हैं।

इस प्रकार-जिन शब्दों से किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, भाव, स्वभाव या अवस्था का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि । इन उदाहरणों में 'उत्साह' से मन का भाव है। 'ईमानदारी' से गुण का बोध होता है। 'बचपन' जीवन की एक अवस्था या दशा को बताता है। अतः उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि शब्द भाववाचक संज्ञाए हैं। हर प्रदार्थ का धर्म होता है। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में देवत्व और पशुत्व इत्यादि का होना आवश्यक है। पदार्थ का गुण या धर्म प्रदार्थ से अलग नही रह सकता। घोड़ा है, तो उसमें बल है, वेग है और आकार भी है। व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है। 'धर्म, गुण, अर्थ और 'भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इन्द्रियों को होता है और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

भाववाचक संज्ञाएँ बनानाः-

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय शब्दों से बनती हैं। भाववाचक संज्ञा बनाते समय शब्दों के अंत में प्रायः पन, त्व, ता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(1) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनानाः-

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
स्त्री-	स्त्रीत्व	भाई-	भाईचारा
मनुष्य-	मनुष्यता	पुरुष-	पुरुषत्व, पौरुष
शास्त्र-	शास्त्रीयता	जाति-	जातीयता
पशु-	पशुता	बच्चा-	बचपन
दनुज-	दनुजता	नारी-	नारीत्व
पात्र-	पात्रता-	बूढा-	बुढ़ापा
लड़का-	लड़कपन	मित्र-	मित्रता
दास-	दासत्व	पण्डित-	पण्डिताई
अध्यापक-	अध्यापन	सेवक-	सेवा

(2) विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनानाः-

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
लघु-	लघुता, लघुत्व, लाघव	वीर-	वीरता, वीरत्व
एक-	एकता, एकत्व	चालाक-	चालाकी
खट्टा-	खटाई	गरीब	गरीबी
गंवार	गंवारपन	पागल	पागलपन
बूढा	बुढ़ापा	मोटा	मोटापा
नबाव	नबावी	दीन	दीनता,दैन्य
बड़ा	बड़ाई	सुंदर	सौंदर्य, सुंदरता
भला	भलाई	बुरा	बुराई
ढीठ	ढिठाई	चौंड़ा	चौंड़ाई

अध्याय – 12

विलोम शब्द

"अ"

अकाल	सुकाल
अगम	सुगम
अग्र	पश्च
अग्रज	अनुज
अघ	अनघ
अघोष	सघोष
अतिथि	आतिथेय
अतल	वितल
अथ	इति
अर्थ	अनर्थ
अनन्त	अन्त
अनुग्रह	दण्ड,कोप
अन्तर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
अनिवार्य	ऐच्छिक
अन्तरंग	बहिरंग
अनुकूल	प्रतिकूल
अनुराग	विराग
अनुरूप	प्रतिरूप
अनुलोम	प्रतिलोम
अधम	उत्तम
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अनुरक्त	विरक्त
अल्पप्राण	महाप्राण
असीम	ससीम
अपकार	उपकार
अनाहूत	आहूत
अनुयायी	विरोधी
अंगीकार	अस्वीकार
अंतरंग	बहिरंग
अंतर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
अंधकार	प्रकाश \ आलोक

अकर्मक	सकर्मक
अकर्मण्य	कर्मण्य \ कर्मठ
अकाम	निष्काम , सकाम
अकेला	साथ
अगम	गम , सुगम
अग्रि	पश्च , पश्चात्
अघ (पाप)	अनघ (पवित्र)
अचर	चर
अचेत \ अचेतन	सचेत , चेतन
अज्ञ	विज्ञ \ प्रज्ञ \ सर्वज्ञ
अतल	वितल
अतिकाय (बड़ा शरीर)	कृशकाय \ लघुकाय
अतिथि	आतिथेय (मेजबान)
अतिवृष्टि	अनावृष्टि (अनावर्षण)
अधम	श्रेष्ठ , उत्तम
अधिकार	अनधिकार
अधिकृत	अनधिकृत
अधीर	धीर
अनंत	अंत
अनाहूत (बिना बुलाया)	आहूत
अनिवार्य	ऐच्छिक \ वैकल्पिक
अनुग्रह	दंड \ कोप
अनुरक्त	विरक्त
अनुराग	द्वेष , विराग
अनैक्य	ऐक्य (एकता)
अपकार	उपकार
अपचय (हानि)	उपचय (वृद्धि)
अपमान	सम्मान
अपयश	सुयश (यश)
अपराध	निरपराध
अपेक्षा	निरपराध
अपेक्षा	उपेक्षा
अभिज्ञ	अनभिज्ञ \ अज्ञ
अभिमुख	= पराङ्मुख (अन्य की तरफ मुख रखने वाला)

भीड़	एकान्त
भूत	भविष्य
भूषण	दूषण
भेद	अभेद
भौतिक	आध्यात्मिक
भोला	चालाक
भोज्य	अभोज्य
भोगी	योगी
भाव	अभाव
भीरु (डरपोक)	साहसी , निर्भीक , निडर
भूषण	दूषण
भ्रांत	निभ्रांत

"म"

मग्न	दुःखी
मधुर	कटु
मनुष्यता	पशुता
मरण	जीवन
मृसण	रुक्ष
महीन	मोटा
मान	अपमान
मूक (न बोलने वाला)	वाचाल (बहुत बोलने वाला)
मेहमान	मेजबान
मोटा	पतला
मंगल	अमंगल
मृदु	कठोर, कटु
मंद	तीव्र \ अमंद \ तेज
मग्न	दुखी
मतैक्य	मतवैभिन्न्य \ मतभेद
मनुज	दनुज
मलिन	निर्मल
मित (सिमित)	अपरिमित , अमित
मितव्ययी	अपव्ययी
मिथ्या	सत्य
मिलन \ मिलना	विछोह \ बिछुड़ना
मिष्ट	कटु
मुस्कान	रुदन

"य"

यथार्थ	आदर्श,
कल्पित	वास्तविक
युक्त	अयुक्त
युद्ध	शान्ति
योग	वियोग
योगी	भोगी
यश	अपयश
युगल	एकल
युवा	वृद्ध
योग्य	अयोग्य
यौवन	बुढ़ापा, वार्धक्य

"र"

रचना	ध्वंस
रति	विरति
राग	द्वेष, विराग
राहत	प्रकोप
राक्षस	देवता
रीता (खाली)	भरा
रुग्ण	स्वस्थ
रंक	राजा
रत	विरत
रक्षक	भक्षक
राजा	रंक, प्रजा
रात्रि	दिवस
रिक्त	पूर्ण
रुदन	हास्य
रोगी	निरोग
राका (चाँदनी रात)	कुहू (काली रात)
राष्ट्रप्रेम	राष्ट्रद्रोह
रिपु (दुश्मन)	मित्र

"ल"

लघु	गुरु, दीर्घ
लभ्य	अलभ्य

अध्याय – 16

वाक्य - शुद्धि

अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना

शब्द शुद्धि के साथ वाक्य शुद्धि का भी भाषा में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वाक्य में अनावश्यक शब्द प्रयोग से, अनुपयुक्त शब्द के प्रयुक्त होने से, सही क्रम या अन्विति न होने से, लिंग, वचन, कारक का सही प्रयोग नहीं होने से, सही सर्वनाम एवं क्रिया का प्रयोग न होने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है। जो अर्थ के साथ भाषा सौन्दर्य को हानि पहुंचाता है।

1. अनावश्यक शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि :

समान अर्थ वाले दो शब्दों या विपरीत अर्थ वाले शब्दों के एक साथ प्रयोग होने तथा एक ही शब्द की पुनरावृत्ति पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है। अतः किसी एक अनावश्यक शब्द को हटाकर वाक्य शुद्ध बनाया जा सकता है। इनमें दोनों शब्दों में से किसी एक को हटाना होता है। अतः दोनों रूपों में वाक्य सही हो सकता है। यहाँ एक रूप ही देंगे।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. मैं प्रातः काल के समय पढ़ता हूँ।	1. मैं प्रातः काल पढ़ता हूँ।
2. जज ने उसे मृत्यु दण्ड की सजा दी।	2. जज ने उसे मृत्यु दण्ड दिया।
3. इसके बाद फिर क्या हुआ ?	3. इसके बाद क्या हुआ ?
4. यह कैसे सम्भव हो सकता है ?	4. यह कैसे संभव है ?
5. मेरे पास केवल मात्र एक घड़ी है।	5. मेरे पास केवल एक घड़ी है।
6. तुम वापस लौट जाओ।	6. तुम वापस जाओ।
7. सारे देश भर में यह बात फैल गई।	7. सारे देश में यह बात फैल गई।
8. वह सचिवालय कार्यालय में लिपिक है।	8. वह सचिवालय में लिपिक है।
9. विन्ध्याचल पर्वत हिमालय से प्राचीन है।	9.विन्ध्याचल हिमालय से प्राचीन है।
10. नौजवान युवक युवतियों को आगे आना चाहिए।	10. नौजवानों को आगे आना चाहिए।
11. किसी और दूसरे से परामर्श लीजिए।	11. किसी और से परामर्श लीजिए।
12. सप्रमाण सहित उत्तर दीजिए।	12. सप्रमाण उत्तर दीजिए।
13. गुलामी की दासता बुरी है।	13. गुलामी बुरी है।
14. प्रशान्त बहुत सज्जन पुरुष है।	14. प्रशान्त बहुत सज्जन है।
15. शायद आज वर्षा अवश्य आयेगी।	15. शायद आज वर्षा आयेगी।
16. शायद वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा।	16. वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा।
17. कृपया शीघ्र उत्तर देने की कृपा करें।	17. कृपया शीघ्र उत्तर दें।
18. वह गुनगुने गरम पानी से नहाता है।	18. वह गुनगुने पानी से नहाता है।
19. गरम आग लाओ।	19. आग लाओ।
20. तुम सबसे सुन्दरतम हो।	20. तुम सबसे सुन्दर हो।

2. अनुपयुक्त शब्द के कारण :

वाक्य में अनुपयुक्त शब्द प्रयुक्त हो जाने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है अतः अनुपयुक्त शब्द हटाकर उस स्थान पर उपयुक्त शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. सीता राम की स्त्री थी।	1. सीता राम की पत्नी थी।
2. रातभर गधे भौंकते रहे।	2. रातभर कुत्ते भौंकते रहे।
3. कोहिनूर एक अमूल्य हीरा है।	3. कोहिनूर एक बहुमूल्य हीरा है।
4. बन्दूक एक शस्त्र है।	4. बन्दूक एक अस्त्र है।
5. आकाश में तारे चमक रहे हैं।	5. आकाश में तारे टिमटिमा रहे हैं।

5.आजकल भ्रष्टाचार के बाजार गर्म हैं।	5. आजकल भ्रष्टाचार का बाजार गर्म है।
6. चोरी करते पकड़े जाने पर, उस पर घड़ों पानी गिर गया।	6. चोरी करते पकड़े जाने पर, उस पर घड़ों पानी पड़ गया।
7. कुसंगति से उस के तन पर कालिख पुत गई।	7. कुसंगति से उसके मुख पर कालिख पुत गई।
8. युग परिवर्तन का बीड़ा कौन चबाता है ?	8. युग परिवर्तन का बीड़ा कौन उठाता है ?
9. तेरी बातें सुनते सुनते मेरे कान भर गये।	9. तेरी बातें सुनते सुनते मेरे कान पक गये।
10. मेरे तो साँस में दम आ गया।	10. मेरे तो नाक में दम आ गया।

10. <u>संयोजक शब्द सम्बन्धी :</u>

सही संयोजक शब्द नहीं लगाने पर भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. यदि वह रुपया, माँगता, तब मैं अवश्य देता।	1. यदि वह रुपया माँगता तो मैं अवश्य देता।
2. जैसा मोहन ने लिखा, जैसा तुम भी लिखो।	2. जैसा मोहन ने लिखा, वैसा तुम भी लिखो।
3. जब राम ने लंका में प्रवेश किया तो बन्दरों ने बहुत आनन्द मनाया।	3. जब राम ने लंका में प्रवेश किया तब बन्दरों ने बहुत आनन्द मनाया।
4. यद्यपि उसने उद्योग किया, पर उसे सफलता नहीं मिली।	4. यद्यपि उसने उद्योग किया, तथापि उसे सफलता नहीं मिली।
5. जैसा लिखो, जैसा मोहन ने लिखा।	5. ऐसा लिखो, जैसा मोहन ने लिखा।
6. जैसा बोओगे, उसी प्रकार काटोगे।	6. जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।
7. ज्यों ही मैं पहुँचा, वह उठ गया।	7. ज्यों ही मैं पहुँचा, त्यों ही वह उठ गया।
8. यह काम करो नहीं तो अपने घर जाओ।	8. यह काम करो या अपने घर जाओ।
9. क्योंकि वह मोटा है अतः वह धीरे चलता है।	9. क्योंकि वह मोटा है इसलिए वह धीरे चलता है।
10. आप इसी समय रवाना हो जाइये, क्योंकि आप को गाड़ी मिल जाय।	10. आप इसी समय रवाना हो जाइये, ताकि आपको गाड़ी मिल जाय ।

II. <u>अशुद्ध वर्तनी के कारण :</u>

वाक्य में प्रयुक्त अशुद्ध वर्तनी से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. ताजमहल की सौन्दर्यता अनुपम है।	1. ताजमहल का सौन्दर्य अनुपम है।
2. महात्मा के सदोपदेश सुनने चाहिए।	2. महात्मा के सदुपदेश सुनने चाहिए।
3. 'कामायनी' के रचियता प्रसाद हैं।	3. कामायनी के रचयिता प्रसाद हैं।
4. पूज्यनीय पिताजी आ रहे हैं।	4. पूजनीय पिताजी आ रहे हैं।
5. पधार कर अनुग्रहीत करें।	5. पधार कर अनुगृहीत करें।
6. देश की दुरावस्था शोचनीय है।	6. देश की दुरवस्था शोचनीय है।
7. व्यक्ति यौवनावस्था में भूलें करता है।	7. व्यक्ति यौवन में भूलें करता है।
8. यहाँ श्रृंगार सामग्री मिलती है।	8. यहाँ शृंगार सामग्री मिलती है।
9. मन्त्री मण्डल की बैठक आज होगी।	9. मन्त्रिमंडल की बैठक आज होगी।
10. मैं आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।	10. मैं आपके उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

जैसे:- सूर, मीरा महादेवी के गीत

खण्ड काव्य की विशेषताएँ :-

- सम्पूर्ण रचना में एक ही छन्द का प्रयोग होता हैं।
- इसका प्रधान रस श्रृंगार, शांत या वीर होता हैं।
- इसमे घटना के माध्यम से किसी महान् आर्दश की अभिव्यक्ति होती हैं।
- खण्डकाव्य मे जीवन की किसी एक घटना का वर्णन होता हैं।

हिन्दी के प्रमुख खण्डकाव्य एवं उनके रचयिता

हल्दीघाटी	=	श्यामनारायण पाण्डेय
पथिक	=	रामनरेश त्रिपाठी
कुरुक्षेत्र	=	रामधारी सिंह 'दिनकर'
पंचवटी	=	मैथिलीशरण गुप्त
सुदामाचरित्र	=	नरोत्तमदास

(ख) मुक्तक काव्य

मुक्तक काव्य मे एक अनुभूति, एक भाव और एक ही कल्पना का चित्रण होता हैं। मुक्तक काव्य कि भाषा सरल व स्पष्ट होती हैं। मुक्तक काव्य मे प्रत्येक छन्द स्वयं मे पूर्ण होता है तथा पूर्वापिर सम्बन्ध से मुक्त होता हैं। बिहारी सतसई के दोहे, कबीर की साखी , रहीम , मीरा , सूर, तुलसीदास आदि के पद (छंद) मुक्तक काव्यके उदाहरण हैं। मुक्तक काव्य के भी दो भेद हैं--

पाठ्य मुक्तक और गेय मुक्तक

1. **पाठ्य मुक्तक**
पाठ्य मुक्तक मे विषय की प्रधानता होती हैं, प्रसंगानुसार भावानुभूति व कल्पना का चित्रण होता हैं तथा किसी विचार या रीति का भी चित्रिण होता हैं।

2. गेय मुक्तक

इसे गीति या प्रगीति काव्य भी कहते हैं। इसमें 1. भाव प्रवणता 2. सौन्दर्य बोध 3. अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता 4. लयात्मकता की प्रधानता होती हैं।

ऐसे मुक्तक जो भाव प्रधान हों, जिनको सुर और लय के साथ गाया जा सके,गेय मुक्तक कहलाते हैं । इन मुक्तकों की शैली भावनात्मक होती है । जैसे- मीरा, सूर आदि के पद ।

अध्याय – 25

रस

रस की परिभाषा -

रस का शाब्दिक अर्थ है । काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे “रस” कहा जाता है ।

पाठक / श्रोता के हृदय में स्थायी भाव ही विभाववादी से संयुक्त हो कर रस रूप में परिणत हो जाता है ।

रसों को काव्य की आत्मा / प्राणत्व माना जाता है ।

रस के अवयव / अंग –

रस के चार अवयव या अंग है – स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी / व्यभिचारी भाव

1. **स्थायी भाव** :- स्थायी भाव का मतलब है **प्रधान भाव** ।
प्रधान भाव वही हो सकता है जो रस की अवस्था तक पहुँचता है । काव्य या नाटक में एक स्थायी भाव शुरु से आखिर तक होता है । स्थायी भावों की संख्या 9 मानी गई है । स्थायी भाव ही रस का आधार है । एक रस के मूल में एक स्थायी भाव रहता है । अतएव रसों की संख्या भी 9 हैं,जिन्हें “नवरस” कहा जाता है । मूलतः नवरस ही माने जाते हैं । बाद के आचार्यों ने 2 और भावों (वात्सल्य व भगवद् विषयक रति) को स्थायी भाव की मान्यता दी । इस प्रकार, स्थायी भावों की संख्या 11 तक पहुँच जाती है और तद्नुरूप रसों की संख्या भी 11 तक पहुँच जाती है ।
नोट विकल्प में अगर रसो की संख्या (9) व (11) हो तो (9) का ही चयन करें ।
2. **विभाव** :- स्थायी भावों के उद्‌बोधक कारण को विभाव कहतें हैं ।
विभाव दो प्रकार के होते हैं-

I. आलंबन विभाव
II. उद्दीपन विभाव

आलंबन विभाव :- जिसका आलंबन या सहारा पाकर स्थायी भाव जगते हैं आलंबन विभाव कहलाता है ।

जैसे – नायक नायिका

आलंबन विभाव के दो पक्ष होते हैं – आश्रयालंबन व विषयालंबन ।

इस परिभाषा के आधार पर चार प्रकार के वीर होते हैं -

1. युद्धवीर
2. दानवीर
3. धर्मवीर
4. दयावीर

(5) रौद्र रस

रौद्र रस की परिभाषा एवं अर्थ - शत्रु या दुष्ट अत्याचारी द्वारा किये गये अत्याचारों को देखकर अथवा गुरुजनों की निन्दा सुनकर चित्तमय एक प्रकार का क्रोध उत्पन्न करता है जिसे **रौद्र रस** कहते हैं।

रौद्र रस का उदाहरण -

उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उनका लगा।
मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा ॥

अथवा

श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे।
सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे ॥
संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।
करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े ॥

विशेष - रौद्र रस का स्थायी भाव **क्रोध** होता है।

(6) भयानक रस

भयानक रस की परिभाषा एवं अर्थ - किसी भयानक वस्तु या जीव को देखकर भावी दुख की अशंका से हृदय में जो भाव उत्पन्न होता है उसे भय कहते हैं। इस **भय** के जाग्रत और उद्दीप्त होने पर जिस रस की उत्पत्ति होती है उसे **भयानक रस** कहते हैं।

भयानक रस का उदाहरण -

उधर गरजती सिन्धु लहरियाँ कुटिल काल के जालों-सी।
चली आ रही फेन उगलती फेन फैलाये व्यालो – सी ॥

अथवा

लंका की सेना तो, कपि के गर्जन से रव काँप गई।
हनुमान के भीषण दर्शन से विनाश ही भाँप गई ॥

अथवा

एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय।
बिकल बढोही बीच ही, परयो मूच्छा खाय ॥

विशेष - भयानक रस का स्थायी भाव **भय** होता है।

(7) बीभत्स रस

बीभत्स रस की परिभाषा एवं अर्थ - घृणित वस्तु अथवा सड़ी हुई लाशें दुर्गन्ध आदि देखकर या अनुभव करके हृदय में घृणा उत्पन्न होती है तो उसे बीभत्स रस कहते हैं। तात्पर्य यह है कि बीभत्स रस के लिए घृणा और जुगुप्सा आवश्यक है।

बीभत्स रस का उदाहरण -

धर में लासे, बाहर लासे
जन - पथ पर पर, सड़ती लाशें।
आँखे त्रिशंस यह, दृश्य देख
मुद जाती घुटती हैं साँसे ॥

अथवा

सर पर बैठो काग, आँखि दोउ खात निकारत।
खीचत जीभहिं स्यार, अतिहि आनन्द उर धारत ॥
गिध्द जाँघ कह खोदि - खोदि के मांस उचारत।
स्वान आँगुरिन कोटि - कोटि के खान बिचारत ॥

अथवा

जहँ - तहँ मज्जा माँस रुचिर लखि परत बगारे।
जित - जित छिटके हाड़, सेत कहुं -कहुं रतनारे ॥

विशेष - बीभत्स रस का स्थायी भाव **घृणा या जुगुप्सा / ग्लानि** होता है।

(8) अद्भुत रस

अद्भुत रस की परिभाषा एवं अर्थ - किसी भयानक अथवा असाधारण वस्तु, व्यक्ति अथवा घटना को देखकर हृदय में कुतुहल विशेष प्रकार का आश्चर्य भाव उत्पन्न होता है इन्ही भावो के विकसित रूप को **अद्भुत रस** कहते हैं।

अद्भुत रस का उदाहरण -

इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा।
मति भ्रम मोरि कि आन बिसेखा ॥

अथवा

देखरावा मातहिं निज अद्भुत रूप अखण्ड।
रोम - रोम प्रति लागे कोटि – कोटि ब्रह्मण्ड ॥

विशेष - अद्भुत रस का स्थायी भाव **आश्चर्य / विस्मय** होता है।

(9) शान्त रस

शान्त रस की परिभाषा एवं अर्थ - तत्व ज्ञान की प्राप्ति अथवा संसार से वैराग्य होने पर शान्त रस उत्पन्ति होती है। जहाँ दुख है न सुख, न द्वेष है, न राग और न कोई इच्छा है ऐसी मनःस्थिति में उत्पन्न रस को मुनियों में **शान्त रस** कहा है।

शान्त रस का उदाहरण -

मन रे तन कागद का पुतला।
लागै बूँद बिनसि जाए छिन में, गरब करै क्या इतना ॥

अथवा

लंबा मारग दूरि घर, बिकट पंथ बहुमार।
कहौ संतो क्यूँ पाइए, दुर्लभ हरि दीदार ॥

The little का प्रयोग भी positive sense में होता है लेकिन इसका मतलब है थोडा सा में जितना भी है वो पूरा का पूरा है । **जैसे** :-

Ex–The little knowledge of computers that she possessed proved a boon for her in getting job.-

जितनी भी उसके पास computer की knowledge थी वो उसे job दिलाने में वरदान साबित हुई ।

- **use of Few , A few , The few :-**

Few , A few , The few का का प्रयोग countable nouns के साथ होता है जैसे :- friends , Horses ,Articles ,Pens etc.

Few का प्रयोग negative sense में होता है मतलब जो भी वस्तु है वो न के बराबर है या है ही नहीं जैसे :-

Ex– I have few friends-मेरे पास नहीं के बराबर दोस्त है ।

A few का प्रयोग positive sense में होता है इसका मतलब है जो भी वस्तु है वो थोड़े में से भी थोड़ी सी है जैसे :-

Ex– I have a few horses. मेरे पास घोड़े है ।

The few का प्रयोग भी positive sense में होता है लेकिन इसका मतलब है थोडा सा में जितना भी है वो पूरा का पूरा है जैसे :-

Ex–The few friends I had have left me. – मेरे पास जितने भी थोड़े से दोस्त थे मुझे छोड़ चुके है ।

Chapter – 2

Preposition

preposition मतलब pre + position

pre का अर्थ पहले (before) होता है, जबकि position का अर्थ स्थान (place) होता है। अतः preposition एक ऐसा word है, जो noun or pronoun के पहले प्रयुक्त होकर noun or pronoun का संबंध sentences के अन्य शब्दों से दिखलाता है।

A preposition is a word used before a noun or pronoun to show its relation with the other words of the sentence.

Example:-

1. The book is **on** the table.
2. The pen is **in** the inkpot.
3. The cat is **under** the table.

उपयुक्त शब्दों में on, in, under, का प्रयोग क्रमश the table, the inkpot, the table के पहले प्रयुक्त हुआ जो वाक्य के अन्य शब्दों -the book, the pen, the cat से सबंध बताता है अत on, in, under, prepositions हैं ।

Rules Of Preposition :-

- preposition हमेशा noun या pronoun से पहले प्रयोगे किया जाता है ।
  noun में हम निम्नलिखित शब्द शामिल करते है

A. noun (cat ,money ,love)
B. proper noun (name like india ,mira)
C. pronoun(him ,you ,her ,us)
D. noun group (my first job)
E. gerund (swimming ,playing)

- preposition 'verb' से पहले कभी नहीं प्रयोग किया जाता है । अगर preposition को verb से पहले use करना चाहते है तो verb की ing form का प्रयोग करना होगा । क्योंकि verb में ing जोड़ देने से वह gerand बन जाता या या फिर उसे noun की form में verb कह सकते है ।

- infinitive में to + verb की I form का प्रयोग किया जाता है I यहाँ to preposition नहीं है बल्कि यह infinitive का ही part है I जैसे :-
  I would like **to move** now.
  infinitive

  यहाँ **to move** infinitive है इसलिए to यहाँ preposition नहीं है I
- जब Object – interrogative pronoun जैसे :- What ,Who ,Whom ,Which ,Where etc. हो तो preposition को वाक्य के अन्त में लगाया जाता है I जैसे : What are you thinking **of** ?
  which of these chairs did you sit **on** ?
- जब Object-Relative pronoun 'that' होता है , तो preposition को वाक्य के अंत में लगाया जाता है I जैसे :-
  Here is the magazine that you asked **for**?
  This is the girl that I told you **of**.
- जब object-infinitive हो तो preposition को infinitive के बाद लगाया जाता है I जैसे :-
  this is a good hotel to stay **at**.
  this is ball to play **with**.
- कुछ वाक्यों में relative pronoun,Hidden किया हुआ रहता है I इनमें preposition अंत में लगता है जैसे :-
  This is the house (where)I lived **in**.
- कुछ वाक्यों में preposition का प्रयोग शुरू में ही किया जाता है सामान्यतया ऐसे वाक्य interrogative होते है I जैसे :-
  By which train did you come ?

  Kinds of prepositions :-

  preposition 4 प्रकार के होते है –

1.**simple preposition** :- at ,in ,for ,from , off, on ,out ,with ,down by, through ,till ,to etc.

2. **compound prepositions**:- about, beside , inside ,along , below ,outside ,amidst , beneath ,within , among, between , without, aloud ,beyond ,underneath

3. **Phrasal Prepositions**:-दो या दो से अधिक शब्दों को जोडकर बनने वाले prepositions ,phrasal preposition कहलाते है I जैसे :-

along with ,in addition to , in place of ,because of ,in case of ,in spite of ,by means of ,in course of ,owing to ,for the sake of , with reference to ,in comparison to , in favour of with ,with regard to , instead of , in accordance with ,in respect to ,according to

4. **Participle Prepositions**:- जब वाक्य में present participle का प्रयोग बिना noun/pronoun के होता है ,तो present participle एक preposition की तरह function करता है I जैसे :- concerning , pending , regarding ,considering ,touching etc.

ex-considering the quality ,the prices are reasonable.

Correct Use of Prepositions:-

(A) Use of 'At':-

Rule (1):-At का प्रयोग छोटे स्थानों के नाम (name of smaller places) के पहले 'में' के अर्थ में होता है। जैसे-

My brother lives at Jajuar. (गांव)

I live at Musallahpur hat. (मुहल्ला)

Rule (2) :- At का प्रयोग नीचे दिये गए शब्दों के बाद 'लक्ष्य' के अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-

shout at	grumble at	shoot at
laugh at	mock at	bite at
look at	kick at	aim at
smile at	growl at	

Rule (3):-At का प्रयोग समय को अभिव्यक्त करने के लिए 'पर' के अर्थ में होता है। जैसे-

He will reach at 5 a.m.

He came at 6 O' clock

Rule (4) :-At का प्रयोग नीचे दिये गए शब्दों के पहले होता है। जैसे-

At the station	At page 50
At a concert	At school
At the airport	At a match
At the bottom	At college
At the theatre	At home
At a lecture	At a concert
At à conference	At the top
At the bus stop	At the bridge
At the bus stop	At university
At the platform	

Rule (5) : 'At' का प्रयोग समय सूचक शब्दों के पहले होता है।

At night	At noon	At dawn
At dusk	At midnight	At afternoon
At daybreak	At twilight	

Rule (6) : At का प्रयोग निम्नलिखित शब्दों के पहले होता है। जैसे-

At this moment At bed time

At this hour At Christmas

At Easter

Rule (7) : At का प्रयोग कीमत/दर/चाल की दर को अभिव्यक्त करने वाले शब्दों के पहले होता है। जैसे-

Milk sells at Rs. 22/- a litre.
(दर -rate)

He got that book at Rs. 50.
(कीमत-price)

The motorcycle is running at eighty kilometres an hour. (चाल की दर-speed)

Rule (8) : At का प्रयोग temporary action (अस्थायी कार्य) को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-

He is at work. अर्थ-He is working now.

She is at play. अर्थ—She is playing now.

Rule (9) : At का प्रयोग उम्र (age) तथा चरण (stage) को अभिव्यक्त करने वाले शब्दों के पहले होता है। जैसे-

My grandfather died at the age of sixty.

I left college at twenty five.

(B) Use of 'In' :-

Rule (1) : In का प्रयोग बड़े स्थानों (bigger places) जैसे—देश, शहर, राज्य, महादेश ,महानगर आदि के नामों के पहले होता है। जैसे-

We live in India. (देश)

India is in Asia. (महादेश)

She lived in Uttar Pradesh (राज्य)

Mr. Thakur lives in Patna (शहर)

My father-in-law lives in Mumbai. (महानगर)

Rule (2) : In का प्रयोग निम्नलिखित phrases में होता है। जैसे-

In the night

(K) Use of 'Below' :-

Rule (1): Below का प्रयोग lower than (से नीचे) के अर्थ में होता है। जैसे-

My father is below seventy. (√)

My father is under seventy. (x)

Rule (2) ; Below का प्रयोग less than (से कम) के अर्थ में होता है ।

His income is below Rs. 5000/- a month. (√)

His income is under Rs. 5000/- a month. (x)

Rule (3) : Below का प्रयोग inferior to (से निम्न/नीचे) के अर्थ में होता है। जैसे-

This work is below my dignity. (√)

This work is under my dignity. (x)

(L) Use of 'Under:-

Rule (1): Under का प्रयोग सामान्यतः 'नीचे' के अर्थ में होता है।

He was sitting under the tree.

The cat is sitting under the chair.

Rule (2) : Under का प्रयोग 'अधीन' के अर्थ में होता है। जैसे-

A writer is under the publisher.

Administration is under the government.

Rule (3): Under का प्रयोग less than (से कम) के अर्थ में होता है।

She was under age.

उसकी उम्र अवश्यकता से कम थी।

I have under rupees two hundred.

मेरे पास दो सौ रुपये से कम है।

Rule (4) : Under का प्रयोग according to (के अनुसार) के अर्थ में होता है। जैसे-

The police arrested the terrorist under the warrant of the court.

I inherited the property under my mother's will.

Rule (5): Under 75 point in the course of; during the time of (अवस्था में) के अर्थ में होता है। जैसे-

He has written this book under suspicion.

उसने इस पुस्तक को शंका की अवस्था में लिखा है।

(M) Use of 'Beneath' :-

Beneath का प्रयोग 'नीचे' के अर्थ में सामान्यतः होता है। जैसे-

He was sitting beneath the tree.

Note: Under तथा beneath का प्रयोग बिना किसी अंतर का होता है ।

(N) Use of 'Behind'

Rule (1) : Behind का प्रयोग At the back of (के पीछे) के अर्थ में होता है। जैसे-

My daughter was hiding behind the door.

मेरी पुत्री दरवाजे के पीछे छिपी हुई थी।

He has left nothing behind him.

वह अपने पीछे कुछ नहीं छोड़ गया है।

(O) Use of 'By'

Rule (1) : By का प्रयोग के किनारे'/'के समीप' के अर्थ में होता है। इस अर्थ में By तथा Beside का प्रयोग एक-दूसरे के बदले होता है। जैसे-

The child came and sat by her. (√)

The child came and sat beside her. (X)

Rule (2) : By का प्रयोग 'निर्दिष्ट समय से पहले' या 'तक' के अर्थ में होता है। जैसे-

The Rajadhani Express will arrive here by 11 O'clock.

By the end of this month, she will have returned from Mumbai.

He will have informed the police of the accident by tomorrow morning.

Chapter – 5

Modals

Modals एक ऐसी सहायक क्रिया है जो वाक्यों के formation यानि बनावट में मदद करती है. इन्हे सामान्यतः Modal Auxiliary verb या केवल Modal verb के नाम से जाना जाता है/ कहते है.

Modal verbs का प्रयोग वाक्य के मुख्य क्रिया के साथ समर्थता, संभावना, गुण, आज्ञा, संभावना, आवश्यकता आदि को व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

Modals का प्रयोग निम्न प्रकार से किया जाता है-

Use of May:-

May का अर्थ होता है सकना

- **Factual probability, Possibility (तथ्यात्मक सम्भावना) के लिए MAY का प्रयोग किया जाता है। जैसे :-**

Example:-

आज वर्षा हो सकती है। it is likely to rain today

It is possible that it will rain today.

It will probably rain today.

it may rain today.

- **permisson(आज्ञा लेना) माँगने और देने के लिए MAY का प्रयोग किया जाता है। जैसे:-**

Example:-

क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?

May I come in? (माँगना)

Yes you may . (देना)

क्या मैं तुम्हारा दो पैन काम में ले सकता हूँ?

May I use your two pen? (माँगना)

You may use one pen. (देना)

- **Good wishes, Blessing, Hope (शुभ कामनाएँ, आशिर्वाद) के लिए MAY का प्रयोग किया जाता है। जैसे:-**

Example:-

ईश्वर तुम्हें लम्बी आयु दें।

I wish you a long life.

May you live long!

ईश्वर आपको खुश रखें।

May you live happily!

- **Purpose (उद्देश्य) के लिए May का प्रयोग किया जाता है। जैसे:-**

कठोर परिश्रम करों ताकि तुम पास हो सको ।

Work hard so that you may pass.

Use of Might:-

- 'MIGHT' may की past form होती है।

Example:-

कल शायद वर्षा हो।

It Might rain tomorrow.

उसने कठोर परिश्रम किया शायद वह पास हो जाए।

He worked hard so that he might pass.

- **To show lesser possibility कम सम्भावना व्यक्त करने के लिए MIGHT का प्रयोग किया जाता है**

Example:-

· उसकी पार्टी में आने की सम्भावना है।

He might attend the party.

· वह शायद भूखा होगा।

He might be hungry.

Use of Can:-

Can का अर्थ होता है सकना

- **To show ability, capacity, Skill (योग्यता व क्षमता दर्शाने में) के लिए can का प्रयोग किया जाता है**

Example:-

मैं अंग्रेजी बोल सकता है।

I am capable of speaking English.

I can speak English.

वह तुम्हारी समस्या सुलझा सकता हूँ।

He is able to solve your problem.

He can solve your problem.

- **To give permission (आज्ञा देना) के लिए can का प्रयोग किया जाता है**

Example:-

तुम जा सकते हो ।

You are allowed to go.

You can go.

- **To show theoretical possibility (सैद्धान्तिक सम्भावना दर्शाने में) can का प्रयोग किया जाता है ।**

Example:-

धुमपान से कैंसर हो सकता है ।

Smoking can cause cancer.

Use of Could:-

can के past tense के रूप में could का प्रयोग होता है। जैसे:-

(2) only the mean

(3) only a means

(4) No Improvement

ANS.-(3)

34. The bullet struck a wall and was **diverted** from its course.

(1) twisted

(2) reflected

(3) deflected

(4) No Improvement

ANS.-(3)

35. You should not **boasting of** your achievements. (3) boast of (4) No Improvement

(1) boast for

(2) boast at

(3) boast of

(4) No Improvement

ANS.-(3)

36. Kannan asked me to go round them, but I **didn't want.**

(1) don't want
(2) don't want to
(3) didn't want to
(4) No Improvement
ANS.-(3)

37. We eat that we **may** live.

(1) might

(2) shall

(3) should

(4) No Improvement

ANS.-(4)

38. When the party ended, the band **pack up** its equipment and left.

(1) will pack up

(2) will have packed up

(3) packed up

(4) No Improvement

ANS.-(3)

39. When the Inspector of Police said this, we knew whom he was **eluding.**

(1) intending

(2) referring to

(3) hinting

(4) No Improvement

ANS.-(2)

40. The doctor **reassured** that the operation was a routine one.

(1) is reassuming (2) reassured me

(3) was reassuming (4) No Improvement

ANS.-(2)

41. I **made** a lecture.

(1) will make

(2) gave

(3) would make

(4) No Improvement

ANS.-(2)

42. It took a long time for him to realise, **what was truth**.

(1) what is truth.

(2) what was the truth.

(3) what the truth was.

(4) No Improvement

ANS.-(3)

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

FREE SAMPLE

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
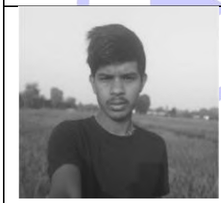	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
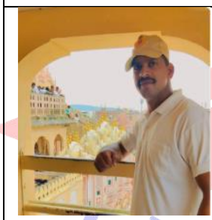	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/9mp4k3

Online order करें – https://shorturl.at/pP479

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO